UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 12
साप्ताहिक धमाका (मंजरी)

"यह काम भी आजादी ..... देता हूँ।"

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हेमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'साप्ताहिक धमाका' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ० हरिकृष्ण देवसरे जी हैं।

प्रसंग – बच्चों के 'साप्ताहिक धमाका' नामक पत्र निकालने पर प्रोफेसर माथुर द्वारा कहा गया यह वक्तव्य आधुनिक सामाजिक विसंगति पर सटीक टिप्पणी है।

व्याख्या – बच्चों द्वारा निकाले गए 'साप्ताहिक धमाका' नामक पत्र के सम्बन्ध में प्रोफेसर कहते हैं। कि इस तरह के गोपनीय कार्य स्वाधीनता संघर्ष के दिनों में किए जाते थे; परन्तु आज भी ऐसे ही संघर्ष की आवश्यकता है। पहले अँग्रेजों से आजादी प्राप्त करनी थी; अब समाज में छिपे शत्रुओं से; जो भ्रष्टाचार और अराजकता फैलाकर सकल समाज में अव्यवस्था की नींव रखना चाहते हैं। ऐसे सत्कार्य तो हम बड़ों को करने चाहिए थे; लेकिन कर रहे हैं ये बच्चे! मैं इन्हें बधाई देता हूँ।

पाठ का सार (सारांश)

समाज की बुराइयाँ, अव्यवस्था, भ्रष्टाचार, अनीतियाँ आदि दुर्गुण मिटाने के लिए कुछ बच्चे 'साप्ताहिक धमाका' नामक हस्तलिखित अखबार निकालते हैं। लाला धनीराम, मुंशी शादीलाल, डॉ० चेलाराम जैसे कई नाम हैं; जो सफेदपोश बनकर स्याह (काले) धंधे करते हैं। बच्चे पूरी तरह गोपनीय रहकर प्रत्येक सप्ताह अखबार का अंक निकाल हर घर के दरवाजे पर बँटवा देते हैं। समाज के तथाकथित ठेकेदार गुमनाम संपादक बच्चों को खोजने की भरपूर कोशिश करते हैं; लेकिन विफल हो जाते हैं। समाज के बुद्धिजीवी बच्चों की भूरि भूरि प्रशंसा करते हैं। अन्ततः मोहल्ले में सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

https://www.evidyarthi.in/